गंध सूंघने वाले की नाक में होती है!

यह विवाद का विषय रहा है कि इन्सानों में फेरोमोन्स होते हैं या नहीं। फेरोमोन्स उन रसायनों को कहते हैं जो एक ही प्रजाति में सूचनाओं के वाहक होते हैं। ये आम तौर पर गंधयुक्त रसायन होते हैं। इनमें से यौन फेरोमोन्स सबसे मशहूर हैं। वैसे जंतुओं में कई सूचनाओं के संप्रेषण में फेरोमोन्स की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

जैसे, एक रसायन है एण्ड्रोस्टेनोन जो मनुष्यों में कई प्रतिक्रियाएं उत्पन्न करता है। ये प्रतिक्रियाएं इस पर निर्भर करती हैं कि इन रसायनों का ग्राही व्यक्ति कौन है। कुछ लोगों को इसकी गंध किसी फूल या वनीला जैसी मीठी महसूस होती है, तो कुछ लोगों को लगता है कि यह पसीने या पेशाब की गंध है। ऐसे लोग भी कम नहीं हैं जिन्हें यह गंध महसूस ही नहीं होती।

अब रॉकफेलर विश्वविद्यालय के लेसली वोशॉल और उनके साथियों ने दिमाग में वह ग्राही खोज निकाला है जो एण्ड्रोस्टेनोन से सक्रिय हो उठता है। उन्होंने यह भी पता लगाया है कि इस ग्राही के कितने रूप हो सकते हैं।

वैसे एण्ड्रोस्टेनोन सुअरों में तो प्रमुख यौन फेरोमोन है। इन्सानों में भी यह पाया तो जाता है मगर इसकी भूमिका स्पष्ट नहीं है। वोशॉल और उनके साथियों ने इन्सानों में पाए जाने वाले 335 गंध ग्राहियों की जांच 66 अलग-अलग किस्म की गंधों से की। एक ग्राही ऐसा मिला जो एण्ड्रोस्टेनोन और उसके निकट सम्बंधी एण्ड्रोस्टाडाईइनोन के प्रति तीव्र प्रतिक्रिया देता है। इस ग्राही का नाम है ओ.आर.7डी.4। यह अन्य 64 गंधों के प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं देता।

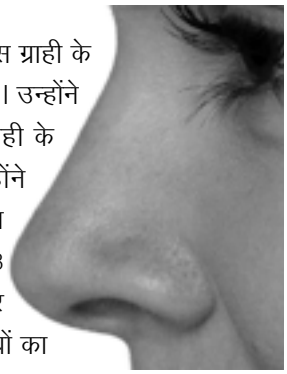

अब वोशॉल और साथियों ने इस ग्राही के विभिन्न रूपों पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने वह जीन ढूंढ निकाला जो इस ग्राही के निर्माण के लिए ज़िम्मेदार है। उन्होंने 391 लोगों में इस जीन की ृंखला पता की तो मालूम चला कि इसके 3 अलग-अलग रूप पाए जाते हैं और ये तीन अलग-अलग ढंग के ग्राहियों का निर्माण करते हैं। ये तीनों ग्राही अलग-अलग प्रतिक्रिया देते हैं। वैसे कई घ्राण विशेषज्ञ मानते ही आए थे कि गंध की अनुभूति में अंतर का सम्बंध मूलतः ग्राहियों में अंतर से होगा।

मगर सवाल यह है कि इन ग्राहियों की खोज का क्या यह मतलब निकाला जाए कि एण्ड्रोस्टेनोन इन्सानों में भी फेरोमोननुमा भूमिका निभाता है? अभी यह कहना मुश्किल है। यह तो मालूम है कि एण्ड्रोस्टाडाईइनोन सूंघने से स्त्री-पुरुष दोनों पर कुछ असर तो होते हैं। ये असर क्या हैं, इसकी खोजबीन ग्राहियों की पहचान के बाद शायद ज़ोर पकड़ेगी। मगर इस बीच उद्योगों ने तो इस संभावना को मुनाफे में तबदील करना शुरू भी कर दिया है। कई सारे ऐसे उत्पाद बाज़ार में हैं जो फेरोमोन होने का दावा करते हैं और विज्ञापनों में बताया जाता है कि एण्ड्रोस्टेनोन 'वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित यौन-आकर्षण वर्धक' है। दूसरी ओर, वैज्ञानिकों के बीच अभी यह बहस चल ही रही है कि इन्सानों में फेरोमोन होते भी हैं या नहीं? ***(स्रोत फीचर्स)***